

भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर ये जगायेंगे जागरूकता, एमओयू हुआ साइन

Updated: 2016-05-18 18:34:40 IST



Share

भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्यूमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इन्सर्जेंसी एस्पिटल और इंडो यूरोप इन्सर्जेंसी कोलैबोरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

संयुक्त। भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाय। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता जिससे हर वर्ष रोकथाम बच्चों की मौत हो जाती है। क्योंकि बच्चों की सर्जिकल बनामट मिलानुसार अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं।

भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्यूमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इन्सर्जेंसी एस्पिटल और इंडो यूरोप इन्सर्जेंसी कोलैबोरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। जिसमें ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, विभिन्न संस्थानों में डॉक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता बढ़ाने का काम करेगी।

इसके अलावा भारत में पीडियाट्रिक का विकास करने में मदद करेगा। इसके तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिया, पीडियाट्रिक न्यूरोलॉजी और पीडियाट्रिक इन्सर्जेंसी में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले डॉक्टरों को ट्रेनिंग दी जायेगी।

एमओयू हुआ साइन

बच्चों की जागरूकता बढ़ाने के लिए इन्सर्जेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के मेडिकल प्रो. डॉ.के गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्यूमेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह जो वर्तमान में केजीएमयू के अर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी ऑफ इन्सर्जेंसी एस्पिटल इन् इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव पौड़ के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

इस बारे में इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्यूमेटोलॉजी और केजीएमयू के अर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक रूप से होने वाले बच्चों की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया

बच्चों की इंजरी रोकने के लिए ACE-ISPT ने मिलाया हाथ, मिलेगी कवर सिक्युरिटी

dainikbhasika.com May 18, 2016, 20:53 PM IST

COMMENTS 0



1 of 1

लखनऊ.तड़क घुर्छानाओं में बच्चों को होने वाली इंजरी से बच्चों को कवर सुरक्षा देने के लिए एकेडमिक कोलेज ऑफ इमर्जेंसी (ACE) और इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामैलोजी (ISPT) अब एक मंच पर आ गए हैं। दोनों ने मिलकर इमर्जेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एंड इन्जरी इनिशियेटिव इन इंडिया (ESPI-INDIA) नाम से नया फोरम तैयार किया है। यह फोरम इमर्जेंसी पीडियाट्रिक्स एंड इंजरी की पहल पर बना है। ईएसपीआई-इंडिया बच्चों की शल्य चिकित्सा को लेकर पब्लिक केयर सर्जिकल पीडियाट्रिक्स को बढ़ाने की दिशा में अपना योगदान देगा।

यह है पूरा मामला

आईएसपीटी के अध्यक्ष व किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्रमा सेंटर के कोऑर्डिनेटर डॉ. अजय सिंह के मुताबिक भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 फीसदी बच्चे हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर पब्लीसीटी में कोई अलग से प्रायोरिटी नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्ट करवा जा रहा है, जिसमें बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाए।

जामरुकता के अभाव में नहीं हो पाता सही उपचार

जामरुकता के अभाव में सही उपचार न मिल पाने से हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। उन्होंने बताया कि बच्चों की शारीरिक बनावट बिलकुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। उन्होंने बताया कि ईएसपीआई-इंडिया देश में स्थापित मेडिकल कॉलेजों सहित सभी चिकित्सा संस्थानों के फैकल्टी मेम्बर व डॉक्टरों को ट्रेनिंग देगा। इसके अलावा पीडियाट्रिक्स के तहत आने वाली विभिन्न यूनिट जैसे पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोलॉजी और पीडियाट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन के सलेक्शन में भी सुधार किया जाएगा। एसीई व आईएसपीटी के बीच यह एमशोयू एसीपीआई के फॉर्मेशन के तहत डॉ. डीके गुप्ता के निर्देशन में किया गया है। डॉ. डीके गुप्ता केजीएमयू के कुलपति भी रह चुके हैं।

एमशोयू का यह है उद्देश्य

एकेडमिक ट्रांसलेशन इनोवेशन, सामुदायिक कौशल विकास (जन स्वास्थ्य), चिकित्सा कौशल विकास एवं प्रशिक्षण, स्वास्थ्य

दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

Posted By: Admin on: May 18, 2016 In: Medical News No Comments



लखनऊ। दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को, यद्यत्कों से अलग इलाज की ज़रूरत होती है। जबकि इमरजेंसी में दुर्घटनाग्रस्त मरीजों का एक ही प्रकार से इलाज किया जाता है। इलाज में तकनीकी खामियों के कारण बच्चा मर जाता है और मरने की जगह दूसरी बताई जाती है। यह जानकारी इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध करते हुए केजीएमयू के डकड़ी रोग विशेषज्ञ प्रो. अजय सिंह ने दी।

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्वरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. वीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई और केजीएमयू के प्रो. सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक इंफेक्टोलॉजी के नेशनल प्रेसिडेंट, केजीएमयू के प्रो. सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का, विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबंधित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जाएगी। प्रतिष्ठ में पीडियाट्रिक सर्वरी, चूड़ो सर्वरी, ज़ायोमेडिक एवं इमरजेंसी मॉडर्निजेशन सुपर स्पेशलिटी यूनिट शुरू करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केंद्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थिति प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक चलाना है। आगामी सितंबर से केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पुष्टि भी तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन नई दिल्ली को, बजट मुहैया करने के लिए प्रस्ताव भेज गया है।

गंभीर स्थिति में बच्चों को मिलेगा बेहतर इलाज

जागरण संवाददाता, लखनऊ : ट्यूमा यानी दुर्घटना में घायल होने वाले बच्चों का बेहतर उपचार हो सके इसके लिए पहली बार कार्य प्रणाली तैयार की जाएगी। इसके लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक एंड इंजरीज इनीशिएटिव (ईएसपीआई-इंडिया) की शुरुआत की गई है। इसके अकादमिक निदेशक प्रो. देवेन्द्र कुमार गुप्ता होंगे।

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) व इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्यूमेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह व अकादमिक कालेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के डॉ. संजीव भोई द्वारा एक एमओयू साइन किया गया। डॉ. सिंह ने बताया कि ईएसपीआई-इंडिया का उद्देश्य पीडियाट्रिक सर्जरी, आर्थोपेडिक्स, न्यूरो सर्जरी व इमरजेंसी का विकास करना है। दरअसल, इमरजेंसी में जब बच्चे आते हैं तो उनके इलाज की अलग से कोई प्रणाली विकसित नहीं है। इसके माध्यम से इमरजेंसी में काम करने वाले प्राथमिक चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी व सतत चिकित्सा कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

बच्चों

जागरण संवाददाता, इस भीषण गर्मी में लू हो सकता है। बच्चे खिलाड़ी व यात्रा करने से अधिक पीड़ित हो बचाव करके इसके सकता है। विशेषज्ञों में नमक व पानी प्रभाव पड़ता है। संन्यूरोलाजिस्ट प्रो. स. मस्तिष्क का एक है

लू के लक्षण

☐ सिर का भारी सिरदर्द

☐ अधिक प्यास एवं शरीर में भारी साथ थकावट

☐ जी मचलना, चकराना व शरीर तापमान बढ़ना

इमरजेंसी के
रहित तरोताजा

दुर्घटना प्रसन्न बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

के ताम्रना का एक लड़का। दुर्घटना गलत बच्चों को, बच्चों के अन्तर्गत पर का बचकों से प्रत्येक इलाज की जरूरत होगी। जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना प्रसन्न बच्चों को एक ही प्रकार से ट्रिट किया जाता है। इलाज में ताम्रना की इंटिमी का अंतर है बच्चों पर जहाँ है और बचक दूसरी बर्गों जहाँ है। यह

कार्यक्रम

सिक्किम से शुरू होगा सिक्किम पीडियाट्रिक ट्रान्स सेंटर में

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग



इमरजेंसी सर्विकल पीडियाट्रिक एव इंजरी, के एमओयू साबन करते एम्स के प्रो. वीके गुप्ता, केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह एवं इमरजेंसी एक्सपर्ट डॉ. सजीव भोई

विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. सजीव भोई और केजीएमयू के प्रो. सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉपोटोलॉजी के नेशनल प्रेसीडेंट,

केजीएमयू के प्रो. सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का, विशेष इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबंधित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में

प्रो. अजय सिंह ने बताया कि वर्तमान में 100 एम्पल खून बढ़ने पर मरीज का ब्लड प्रेशर (बीपी) गिर जाता है जबकि बच्चों में दो लीटर निकलने पर भी बीपी नहीं कम होता है। जिसकी वजह से इलाज करने वाले चिकित्सक मरीज बच्चों के जीवन के संकट को पाप नहीं पाते हैं और अधिक खून रिसाव की वजह से बच्चों की मौत हो जाती है।

जानकारी सुधवार को इमरजेंसी सर्विकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध करते हुए केजीएमयू के इंडी रोग विशेषज्ञ प्रो. अजय सिंह ने दी।

इमरजेंसी सर्विकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी

सी जशाजेग

2020

मनोज
संयुक्त
भारत
विरुद्ध
महिला
या गया
कादमी
के लिये

षट

द राजा
पाध्यक्ष
बाबत
स्कास

ध

खनऊ
वि के
कहना
रहा है।
बाहिए।
सविधि
स संबंध
दरों के
कही है।

राज कर
मुक्त भोगी
सूटकेस
न्यासिनी
के लिए
नी थी।

ए

रुस्

ी वाले
न

र जाएंगे।
टी एंटेस
स्थानी के
टर बनाए
प्रक्रिया
प्रक्रिया

अमरनाथ यात्रियों को रेल- 20 तक काउंसिल बस किराए में छूट की मांग बोर्ड ने संबद्ध

एएनएन
लखनऊ। अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं को सरकार की ओर से सुविधा मुहैया कराए जाने की मांग को लेकर सनातन महासभा ने बुधवार को जीपीओ पार्क में प्रदर्शन किया। इस दौरान सभी ने केन्द्र-राज्य सरकार पर हिन्दुओं की आस्था के प्रतीक अमरनाथ यात्रा के प्रति भेदभाव का आरोप लगाया।

महासभा के संयोजक डॉ. प्रवीण

ने अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए रेल व बस के किराये में 50 प्रतिशत छूट व आवास और खाने की व्यवस्था कराए जाने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि यात्रा में जाने वाले लोगों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वहीं एडवोकेट संतोष पाण्डेय ने यात्रा के दौरान मृत श्रद्धालुओं के परिवारों को पांच लाख रुपये मुआवजा दिलाए जाने की बात कही।

एएनएन
लखनऊ। देशभर के सीबीएसई बोर्ड विद्यालयों से सेंट्रल बोर्ड ऑफ एजुकेशन, सीबीएसई बोर्ड ने उनके यहां की सुविधा के लिए संचालित होने गाइडेंस और काउंसिलिंग की सुविधा संदर्भ में जानकारी मांगी है। बोर्ड व जानकारी एक तयशुदा प्रश्नोत्तरी आ फार्मेट में आगामी 20 मई तक स्कूलों के है। इस संबंध में बोर्ड की ओर से सीबीएसई सभी स्कूलों की पत्र लिखकर जानकारी से भेजने को कहा गया है।



केजीएमयू के प्रायोपेडित विभाग और प्राइसन्टीप्राइर के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर को दिखाते हुए प्रो. देवेंद्र कुमार मुख, प्रो. प्रजय सिंह, और संजीव मोई

प्रो. हैटर अब्बास एनेस्थेसिया से इमरजेंसी मेडिसिन विभाग में स्थानांतरित

लखनऊ। केजीएमयू में बुधवार को कार्यपरिषद की आकस्मिक बैठक आयोजित की गई। आयोजित बैठक के दौरान प्रो. हैटर अब्बास निश्चेतना विभाग से स्थानांतरित करते हुए अस्थाई तौर पर इमरजेंसी मेडिसिन विभाग की जिम्मेदारी सौंपने के साथ कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में कार्यपरिषद ने चयन समिति के निर्णयों पर चर्चा करते हुए नए विभागों के लिए शिफ्टों की नियुक्ति और मौजूदा लोगों को प्रमोशन दिया, जिसके तहत वैस्क्यूलर सर्जरी विभाग, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेटिव विभाग, में एक-एक सह आचार्य की तैनाती की गई।

रोडवेज के लिए अनुबंधित ब

लटौप पंडेय

लखनऊ। परिवहन निगम की अनुबंधित बसें काफी फायदा का सीढ़ा बन गयी है। यह उनके लिए सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी बन गयी है। निगम की अपनी बसें सारे संसाधनों के साथ भ्रष्टाचार के चलते घाटे पर संचालित हो रही है। वहीं अनुबंधित बसें बीते वर्षों में लगातार निगम की आय बढ़ाने का काम कर रही है। वर्ष 2015-16 में निगम की बसें ने 20.66 करोड़ का घाटा और अनुबंधित बसें ने 46.89 करोड़ रुपये का फायदा दिया। इससे निगम को करीब 26.22 करोड़ रुपये का घाटा हुआ। वहीं 2014-15 में निगम की बसें 52.01 करोड़ रुपये घाटे और अनुबंधित बसें ने 40.05 करोड़ रुपये

भ्रष्टाचार के त

का फायदा दिया था। उप राज्य सड़क परिवहन बोर्ड में वर्तमान समय में 954 है, जिसमें 7293 बसें निगम अनुबंधित बसें संचालित हो की अपनी बसें अनुबंधित बसें से ज्यादा है। बसें में चालक निगम को होते हैं। प्रदेश के इनका संचालन होता है। पुरानी समय पर हटाकर उसकी जगह लगा दिया जाता है। उसने भ्रष्टाचार की भेंट चढ़कर हमें है। जबकि निगम की आय

3
वा
र
गोम
मुख
सदर
बैठ
दौर
प्रव
के
अनु
वर्ग
बीने
में
आ
पत्र

पर रखे जाने हैं। यह काम भी चल रहा है। अब तक साथ ही ट्रेक बिछाने का काम भी चल रहा है। सारा दो किमी. पटरी बिछाई जा चुकी है।

मिलना जरूरी है। इसकी राजह ट्रैन के ऊपर से भेटो रेल का गुजरना है।

पा पचास से हज़ार करोड़ रुपए के सेपटी ऑडिट रिपोर्ट को कार्रवाई के लिए मुख्य सचिव को भेजा जा रहा है।

ध्यान केंद्रित करना होगा। वहां किसी भी प्रकार से बचने के लिए भी इनको प्रशिक्षित कि

बच्चों की चोटों के निदान के लिए एमओयू

अनार उजाला ब्यूरो

लखनऊ। देश में बच्चों की चोट से संबंधित जागरूकता के लिए हमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक एंड इंजरीज इनिशिएटिव इन इंडिया (ईएसपीआई इंडिया) अभियान चलाएगी। इसमें बच्चों में होने वाले इंजरी के बाद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों, मोडिकल कॉलेजों और चिकित्सा संस्थानों के डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया जाएगा। बुधवार को इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी, एकेडेमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेबरेशन ने मेमोरेंडम ऑफ अंडर स्टैंडिंग (एमओयू) साइन किया गया।

इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष प्रो.अजय सिंह ने बताया कि ईएसपीआई इंडिया के गठन का उद्देश्य बाल इमरजेंसी शाल्य चिकित्सा का सुदृढीकरण और नई चिकित्सा विधिप्रताओं व एक्जुट केयर सर्जिकल पीडियाट्रिक्स का विकास करना है। इसमें पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक आर्थोपेडिक पीडियाट्रिक न्यूरो सर्जरी, पीडियाट्रिक इमरजेंसी



साथ आठ तीन सैकड़, ईएसपीआई इंडिया का शुभारंभ

एमओयू पर साइन करते इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी, एकेडेमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेबरेशन

मोडिसिन को शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। लेकिन इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई प्रशिक्षण दिया जाता है। इसीलिए प्रशिक्षण और जानकारी की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता और हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है।

एमओयू के माध्यम से हमरजेंसी में रोगी बच्चे की शाल्य चिकित्सा को ठीक करने व सुधार करने के लिए एक प्रणाली का विकास करना है। उन्होंने बताया कि इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष प्रो. अजय सिंह, एकेडेमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई ने एमओयू में हस्ताक्षर किए हैं।

यूपी बोर्ड : 10वीं

हिमांशु प्रजापति
90.16%

मो. रायच
90.16%

अनुराग
90%

रायकेश यादव
90.8%

अनुकृति स
86.33%

दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

■ लखनऊ ।

सहारा न्यूज ब्यूरो

दुर्घटना-ग्रस्त बच्चों को वयस्कों से पृथक इलाज की जरूरत होती है, जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना-ग्रस्त मरीजों को एक ही प्रकार से ट्रीट किया जाता है। इलाज में तकनीकी त्रुटियों की वजह से बच्चे मर जाते हैं। यह जानकारी बुधवार को इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध के दौरान केजीएमयू के हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रो. अजय सिंह ने दी।

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डा. संजीव और केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह के मध्य हुआ। इंडियन

ट्रमा सेंटर में सितम्बर से शुरू होगा सर्जिकल पीडियाट्रिक, एम्स के साथ अनुबन्ध

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग

सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के नेशनल प्रेसीडेंट, केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबंधित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में पीडियाट्रिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपैडिक एवं

इमरजेंसी मेडिसिन, सुपर स्पेशलिटी यूनिट शुरू करने की है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केन्द्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थिति प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों

तक चलाना है। आगामी सितम्बर से केजीएमयू के ट्रमा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पृष्ठभूमि तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन को बजट मुहैया कराने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है।

बच्चों की इंजरी के इलाज के लिए प्रशिक्षित किये जाएंगे डॉक्टर

लखनऊ (सं)। आने वाले दिनों में बच्चों की इंजरी के उपचार के लिए चिकित्सक प्रशिक्षित किये जाएंगे जिससे वह उनकी सर्जरी खासे बेहतर ढंग से कर सकें। देश में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक

चिकित्सकों को प्रशिक्षित करने के लिए एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

ट्रामेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, चिकित्सा संस्थानों में डॉक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता जगाने का काम करेगी।

इसके अलावा देश में पीडियाट्रिक के विकास करने में भी मदद करेंगे। इसके तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पेडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पेडियाट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन विषयों को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी।

देश में कुल बच्चों की जनसंख्या

के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि देश में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाय। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता जिससे हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है।

क्योंकि बच्चों की शारीरिक बनावट बिल्कुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डॉ.के गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह जो वर्तमान में केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया

के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे में इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी और केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में रोगी बच्चे की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया गया है। इसके तहत देश भर के चिकित्सा संस्थानों में बच्चों में होने वाली इंजरी के प्रति जागरूकता और ट्रेनिंग दी जायेगी। लक्ष्य है कि कुशल प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है।

इसके तहत बच्चों में होने वाले इंजरी के बाद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों को ट्रेड करना है।

हरअसल भारत जैसे देश में प्राथमिक स्तर पर अच्छी देखभाल न हो पाने के कारण तमाम बच्चों की मौत हो जाती है। विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी और ज्ञान की कमी भी इसके लिए जिम्मेदार है।



घायल बच्चों के इलाज के लिए हुआ एमओयू

■ एनबीटी, लखनऊ : राजधानी समेत देश भर के घायल बच्चों को बेहतर इलाज देने के लिए इंडियन सोसायटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रौमाटोलॉजी (आईएसपीटी) ऐंड अकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स (एसीईई) ने हाथ मिलाया है। यह जानकारी आईएसपीटी के हेड और केजीएमयू के ऑर्थो डिपार्टमेंट के प्रो. अजय सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि दोनों संस्थाओं ने इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स ऐंड



इंजरी इन्शिरण्टिव इन इंडिया की पहल भारत में की है। इसके तहत 17 मई को एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य इमरजेंसी में आने वाले बच्चों के लिए एक ऐसी सुविधा का विकास करना है, जहां उन्हें पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन की सभी सुविधाएं एक ही छत की नीचे मिल सकें। एमओयू पर हस्ताक्षर करने वालों में प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता और डॉ. संजय भोई भी शामिल रहे।

AMITY UNIVERSITY
GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

B.Tech & M.Tech
2016 ADMISSIONS

INDIA'S #1 RANKED
ENGG. SCHOOL WITH

OVER
35 UGC
RECOGNISED
ENGG. DEGREES

• M.Tech
• B.Tech

राशि मिलेगी। चन्द्रावल के पूर्व प्रधान राजेन्द्र यादव सहित तमाम ग्रामीणों ने दो किशतों में अनुदान राशि दिए जाने की मांग की। प्रभारी जिला पंचायत राज अधिकारी उमाशंकर मिश्रा के मुताबिक लाभार्थी को दो किशतों में अनुदान राशि दिए जाने का नियम है।

मंदिरों के आस-पास घूमते बेसहारा जान को पकड़ने के निर्देश दिए। मंदिरों की जाने वाले प्रत्येक मार्ग की प्रकाश व्यवस्था ठीक कराने तथा अस्थायी प्रकाश व्यवस्था पूर्व की भाँति जनरेटर लगाने के निर्देश प्र मार्ग प्रकाश को दिए।

घायल बच्चों को सही आगे आए आईएस



लखनऊ (डीएनएन)। राजधानी समेत देश भर के घायल बच्चों को बेहतर इलाज देने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलजी (आईएसपीटी) एंड अकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स ऑफ इंडिया (एसीईई) ने हाथ मिलाया है। यह जानकारी आईएसपीटी के हेड और केजीएमयू के आर्थो विभाग के प्रो. अजय सिंह ने दी।

उन्होंने बताया कि भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि भारत में बच्चों की इजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं

है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है, जिससे बच्चों की इजरी के बारे में विस्तार से

● जागरूकता लाने के लिए एमओयू हुआ साइन

बताया जाए। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता, जिससे हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। क्योंकि बच्चों की शारीरिक बनावट बिल्कुल अलग होती है इसलिए इनकी इजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। भारत में बच्चों की इजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए यह एमओयू

त
म
त
व
ने
भ
रि
प्र
य
अ
वि
हे
के
19
हु
सा
इंज
कॉ
प्रि
करे

मे एकादश अर्ध
हिन लखनऊ
करीब बर्ग
हिएन आर मे बर्ग आ रग्री रेलवे केर धरल धारमल अरल
मे एकेलिक ईजन तक पहुँच गयल हो
लीकन उतरे छोटे स्टेशनों से देसा
करोल करने का तरीका नहीं बदला।
अब भी कई मंडलों में छोटे स्टेशनों से
देसा टीसी शेफ बानी कैरा वेस्ट के जरिए
बड़े स्टेशन तक पहुँचाया जाता है। यहाँ

था। अब स्टेशनो पर होने वाली आग को उसी दिन में बीच में जमा किया जा सकता।
इससे रेलवे को ब्याज अधिक मिलेगा। साथ ही कैरा पहुँचने और ट्रेन में बैठ
रखवाने में भी कई कमवारीयों की ब्यूटी लगानी पड़ती थी। ऐसे में इन कमवारीयों
को भी दूसरे कामों में लगाया जा सकता।
ये उस धैसे को बैक में जमा किया जाता
है। कई कुतरल के एक कैरा दिन को देन
के अंदर रखने में भी रेलवे को काफी
मशकत कराने पड़ती थी।

डॉक्टरों के प्रतिक्षा के लिए एमओयू साइन

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

भारत में प्रतिवर्ष लाखों बच्चे किसी न किसी इजरी का शिकार होते हैं। जागरूकता व सही ज्ञान न होने से बच्चों को सही इलाज नहीं मिलता है। जिससे उनकी मौत हो जाती है।

बच्चों की इजरी को कम करने के लिए एमबीबीएस कर चुके युवा डॉक्टरों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इसलिए ही डॉइयन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रैमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेजेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। यह सोसाइटी बच्चों की इजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, चिकित्सा संस्थानों में डॉक्टरों को ट्रेनिंग देते, जिससे बच्चों के इजरी को समय पर बेहतर इलाज मिले।



डॉइयन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रैमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेजेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है

इजरी होनी जरूरी नहीं

बच्चों की इजरी से जुड़े पर्यक्रम व ट्रेनिंग को शुरू करवाने में डॉइयन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रैमेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह (केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर), इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिस एव इजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता (वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के विभागाध्यक्ष), एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संदीप भोई को भूमिका अहम है।

चिकित्सा संस्थानों के देवो प्रतिष्ठा

डॉइयन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रैमेटोलॉजी और केटीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आर्थोपेडिक क्लब में बच्चों की इजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के लिए यह अहम एमओयू साइन किया गया है। इसके तहत चिकित्सा संस्थानों में बच्चों में होने वाली इजरी के प्रति जागरूक किया जाएगा। इसका लक्ष्य कुशल प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण को बढ़ावा देना, स्वास्थ्य सेवा अभ्युर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एव सुचारु के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है। इससे बच्चों में होने वाली इजरी के हद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों को रूढ़ करना है।

बच्चों की इंगरी के लिए एमओयू साइन

लखनऊ। भारत में प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर बच्चे मारतों और इंगरी का शिकार हो रहे हैं और बच्चों की इंगरी को लेकर पूरे एनबीपीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही उसका प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे बच्चों की इंगरी के बारे में बिलार रूप से बराबरा जा सके। ऐसी स्थिति में बच्चों को जागरूक करना और उन्हें इसके बारे में ज्ञान देने की बड़ी आवश्यकता है। जिससे बच्चे के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता है और हर वर्ष लैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। बच्चे और बड़ों के हाथोंर हो बच्चे अंतर होते हैं। जिसके लिए उनका इलाज भी बड़ों के इलाज से काफी अलग होता है। जिसकी की इंगरी को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलजी, एकेडमिक कॉलेज आफ इमारनेसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमारनेसी

फोरेवरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

ये सोसाइटी बच्चों की इंगरी को लेकर पूरे भारत के भेडिकल कालेजों, शिक्षित संस्थानों में डाक्टरों की ट्रेनिंग के साथ जागरूकता बढ़ाने का काम करेगी। इसके अलावा भारत में पीडियाट्रिक का बिकास करने में मदद करेगी। इसके



सहज पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक आर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमनेसी मेडिसिन सिफर को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी। बच्चों भी जागरूकता बढ़ाने के लिए इमारनेसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंगरी के सिरेमिक प्रो. डीके गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केनोएरनसु के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलजी के अध्यक्ष डा. अजय सिंह जो वर्तमान में

केनोएरनसु के आर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी कॉलेज आफ इमारनेसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोऑरडिनेटर डा. संगीत मोह के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे में इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलजी और केनोएरनसु के आर्थोपेडिक विभाग के डा. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में रोगी बच्चे की इंगरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया गया है। जिससे देश भर के शिक्षित संस्थानों में बच्चों में होने वाली इंगरी के प्रति जागरूकता और ट्रेनिंग दी जायेगी। जिसका लक्ष्य है कि कुलत प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके एमोवरण परिवर्तन एवं सुचारु के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है। जिससे बच्चों को इंगरी से बचाया जा सके।

बच्चों को इंजरी रोकने के लिये एसोई.आईएसपीटी. ने मिलाया हाथ

लखनऊ, बृधवार। सड़क दुर्घटनाओं में बच्चों को होने वाली इंजरी से बच्चों को कवर सुरक्षा देने के लिए एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमर्जेंसी और इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेलाजो अब एक मंच पर आ गए हैं। दोनों ने मिलकर

इमर्जेंसी सर्विकल पीडियाट्रिक्स एंड ट्रान्ज्यूरी इनिशियेटिव इन इंडिया नाम से नया फोरम तैयार किया है। यह फोरम इमर्जेंसी पीडियाट्रिक्स एंड इंजरी को पहल पर बना है।

इएसपीआई.इंडिया बच्चों को सार्वजनिक स्थानों को लेकर एक्यूट केयर दिशा में अपना योगदान

देना आईएसपीटी के अध्यक्ष व किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्राना सेंटर के कोऑर्डिनेटर डॉ. अजय सिंह के मुताबिक भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 फीसदी बच्चे

हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिसमें

**ई.एस.पी.आई.
इंडिया बच्चों की
शाल्य चिकित्सा
पर कटेगा काम**

बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाए। जगरकला के अभाव में सभी उपचार न मिल पाने से हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। उन्होंने बताया कि बच्चों की शारीरिक इनामर बिलकुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज

के तरीके भी अलग हैं। उन्होंने बताया कि ईएसपीआई.इंडिया देश में रम्याप रत मेडिकल कॉलेजों सहित सभी चिकित्सा संस्थानों के फैकल्टी मेम्बर व डॉक्टरों को ट्रेनिंग देगा। इसके अलावा

पीडियाट्रिक्स के तहत आने वाली विभिन्न यूनिट जैसे पीडियाट्रिक सर्वरी पीडियाट्रिक ऑर्थोपीडिक्स पीडियाट्रिक न्यूरोसर्वरी और पीडियाट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन के सलेक्स में भी सुधार किया जाएगा। एसोई व आईएसपीटी के बीच यह एमओयू एसोपीआई के एकेडमिक डॉक्टर डॉ. डॉके गुप्ता के निर्देशन में किया गया है। डॉ. डॉके गुप्ता केबीएनयू के कुलपति भी रह चुके हैं। एकेडमिक ट्रेंसफरेशन इनोवेशन समुदायिक कौशल विकास ज्वन स्वास्थ्य चिकित्सा कोशल विकास एवं प्रशिक्षण स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाना और इमर्जेंसी ट्रेटमेंट के लिए मानक तैयार करना।

दोपहर राखे बाहर बने आग पर पूरी तरह से कब्ज़ पाया जा सका। इस घटना में कार्यालय में रखी तमाम फाइलें, टीबो, योमर, पंखे व फ़िज स्वाहा हो गये। इसके अतिरिक्त कितनी फाइलें स्वाहा व कल-क्या सामान स्वाहा हुआ है। इसका पता लगाने में मारे

मेट्रो रेल चलाने
महिलाओं को

सहारा न्यूज ब्यूरो

सोमराटी और पेरिपेटिक हॉमोटेलाजी के नेतृत्व प्रेसिडेंट केजीमराटू के दो अन्य मित्र ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का चिकित्सा इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्ष करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबंधित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में पेरिपेटिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपेडिक एंड

लखनऊ (एसएनएन)
चलाने के लिए 21 मई
भर्रा की गई है। इसके
ऑपरेटर नियुक्त हैं।
ऑपरेटर (ड्राइवर)
प्रतिभक्षण दिया जाएगा
नए मशीने की प्रो
जवाबी। नए सड़क
2016 में ट्रांसपोर्ट
मेट्रो रेल एक्सप्रेस

79

बालक ने कहा
हमारे घर में

निर्णय एतादृशमन्तरस्य
यत्किं प्रोक्तकलम

मियों को काम
एनर्जिज के बारे

पूना। पेट्रो रेल
हलाना नहीं होगी

भूमिपुत्रा अहम

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग

इमरजेसी सर्विकल

पौष्टिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पौष्टिक सर्वो विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इडिया के कोषाध्यक्ष डा. संजीव और केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह के साथ हुआ। इंडियन

तक चलना है। आगामी मितम्बर में केजोरमपू के टाया सेटर में कार्यक्रम शुरू करने की पुष्टि भी तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन की वजह मुहैया कराने के लिए प्रयास भेजे गये हैं।

र रही कार्यपरिषद की बैठक

बत्तियों की डंजरी के लिए एमओयू साइज

राज्यभर। भारत में प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर बच्चों द्वारा छोटी और बड़ी की डंजरी को लेकर पूरे एमपीपीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही उसका प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे बच्चों की डंजरी के बारे में विस्तार रूप से बताया जा सके। ऐसी स्थिति में बच्चों को जागरूक करना और उन्हें इसके बारे में ज्ञान देने की बड़ी आवश्यकता है। जिससे बच्चे के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता है और हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। बच्चे और बड़ों के माथिर हो काफी अंतर होते है। जिससे लिए उनका इलाज भी बड़ों के इलाज से काफी अलग होता है। जिससे की डंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए प्रशिक्षण सौसाइटी आक धीरेधीरे ट्रान्सेलान्सी, एकेडमिक कलेज आफ इमारजोसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमारजोसी

फोरेनरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

ये सौसाइटी बच्चों की डंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कालेजों, विश्विद्यालयों, संस्थानों में डाक्टरों को प्रशिक्षण के साथ जागरूकता जगाने का काम करेंगे। इसके अलावा भारत में धीरेधीरे का विकास करने में मदद करेंगे। इसके



तहत धीरेधीरे सर्जरी, धीरेधीरे आर्थोपेडिक्स, धीरेधीरे न्यूरोसर्जरी और धीरेधीरे इमर्जेसी मेडिसिन विषयों को लेकर प्रशिक्षण दी जायेगी। बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमारजोसी सर्जिकल धीरेधीरे एम डंजरी के निवेदनक प्रे. इसके गुना जो प्रशिक्षण में एम दिल्ली में धीरेधीरे विभाग के हेड और केओएयू के पूर्व कुलपति है, प्रशिक्षण सौसाइटी आक धीरेधीरे ट्रान्सेलान्सी के अध्यक्ष डा. अजय सिंह जो वर्तमान में

केओएयू के आर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर है और एकेडमी कलेज आफ इमारजोसी एक्सपर्ट्स इन प्रीटिआ के कोमोडम डा. सुनील चंद के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे में प्रशिक्षण सौसाइटी आक धीरेधीरे ट्रान्सेलान्सी और केओएयू के आर्थोपेडिक विभाग के डा. अजय सिंह ने बताया कि आज्ञास्थिक कल में रोगी बच्चों की डंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन

किया गया है। जिससे देश भर के विश्विद्यालय संस्थानों में बच्चों में होने वाली डंजरी के प्रति जागरूकता और प्रशिक्षण दी जायेगी। जिसका अर्थ है कि कुशल प्रथमिक चिकित्सकों के प्रशिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पथदर्शन परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है। जिससे बच्चों को डंजरी से बचाना जा सके।